उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग सर्जना पुरस्कार' से सम्मानित

मूल्य : ₹ 50/-

निकट - 43

वर्ष 20 - जनवरी-अप्रैल 2026

संपादक : कृष्ण बिहारी

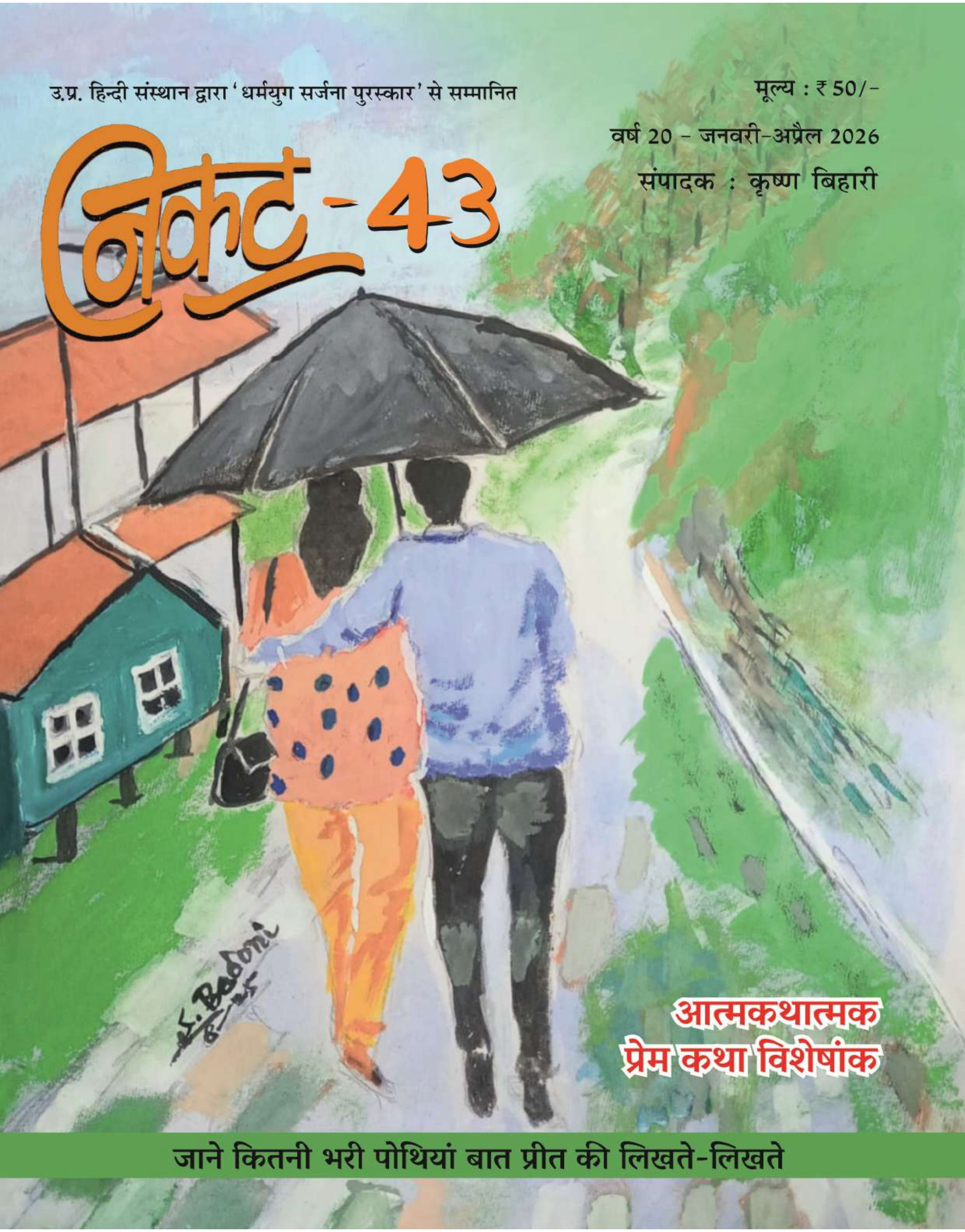

आत्मकथात्मक प्रेम कथा विशेषांक

जाने कितनी भरी पोथियां बात प्रीत की लिखते-लिखते

पंकज सुबीर का रचना संसार : उपन्यास

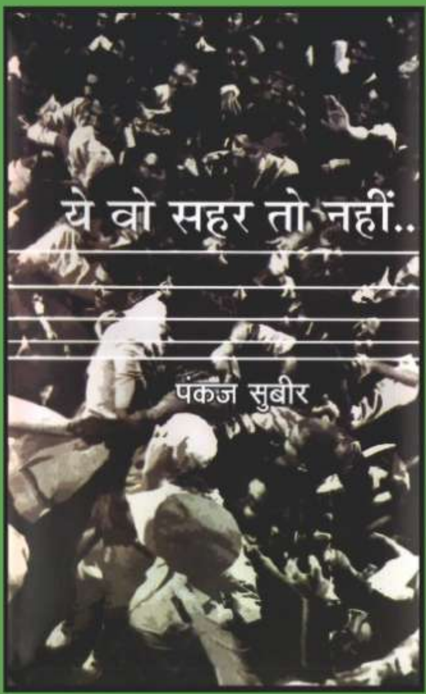

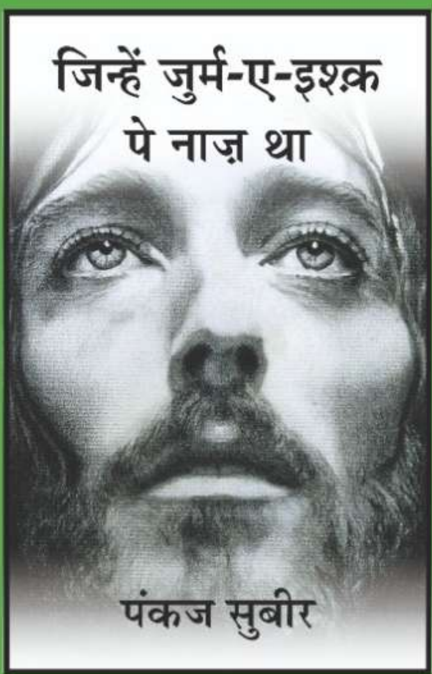

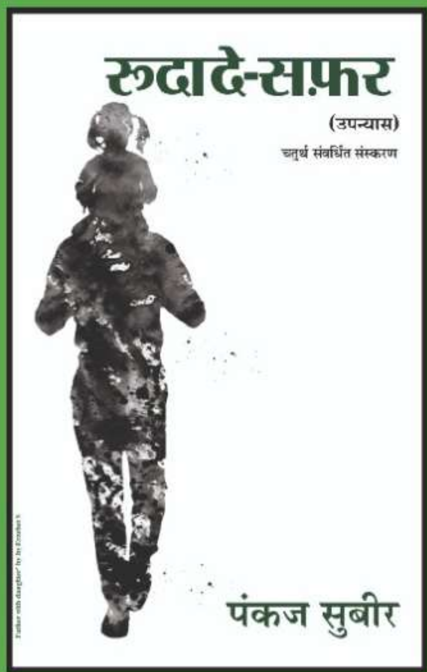

निकट

संयुक्त अरब इमारात से शुरू, अब भारत से प्रकाशित

कथा प्रधान त्रैमासिकी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा धर्मयुग सर्जना पुरस्कार से सम्मानित

वर्ष : 20, अंक-43, जनवरी-अप्रैल 2026

Editor: Krishna Bihari
HIG-46, B Block, Panki
Kanpur-208020
mobile: 6307435896
email: krishnatbihari@yahoo.com

प्रति रुपए 50/-
वार्षिक रुपए 500/-
तीन वर्ष रुपए 1500/-
(डाक खर्च अलग से)
भुगतान ऑन लाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :

बैंक : बैंक ऑफ बड़ोदा
खाता संख्या : 28050100010192
खाता धारक : Krishna Behari Tripathi
आई एफ एस सी : BARB0SAPRBS
बैंक शाखा : सराय मसवानपुर ब्रांच, कानपुर
उत्तर प्रदेश

6307435896@ybl

भारती भाषा संवर्धन संस्थान
द्वारा सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार : सुरक्षित
निकट से प्रकाशित सामग्री लेने के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से संपादक और प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी प्रकार के विवाद लखनऊ न्यायालय में विचारणीय।
मुद्रक : अमन प्रकाशन, 104-ए / 80-सी, कानपुर, (उ. प्र.) मो.- 9044344050

निकट पत्रिका से संबन्धित सभी पद अवैतनिक
संपादक, स्वामी कृष्ण बिहारी, एच आई जी-46,पनकी बी ब्लॉक, कानपुर-208020 से प्रकाशित।

निकट

संस्थापक – अशोक कुमार

संपादक – कृष्ण बिहारी

उप संपादक

धनंजय कुमार सिंह

भूपेन्द्र कुमार सिंह

सहयोगी

राधेश्याम यादव

राम नारायण त्रिपाठी

व्यवस्थापक

अभिनव त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार

राजेश तिवारी एडवोकेट

2/241, विजयखंड, गोमती नगर

लखनऊ

आवरण

शशि भूषण बडोनी

रेखांकन

शशि भूषण बडोनी, निर्देश निधि

अगला अंक निकट – 44

मई – अगस्त 2026

इस अंक में -

संपादकीय : समय से बात – 43

यदि प्रेम अनुचित है तो फिर घृणा क्या है ... -03

पिछले अंक पर प्रतिक्रिया -05

आलेख

प्रेम की राह बड़ी अलबेली... - सृष्टि उपाध्याय -06

कहानियाँ :-

उस रात की वर्षा में – प्रियंवद -08

मैं उस अग्नि में उतर जाती हूँ - जया जादवानी -14

लाल कवेलुओं की छत - पंकज सुबीर -20

आख़िरी ख़त - डॉ. कविता विकास -30

वादों का क्या ! - अब्दुल गफ्फार -32

पूरक - प्रगति गुप्ता -34

तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा में - पूनम मनु -40

पंजाब-मेल एक प्रेम कथा - सुरेश हंस -46

फेड इन-फेड आउट - विज्ञान भूषण -61

और प्यार हो गया – लता शर्मा -65

जिंदगी खूबसूरत है - आरती आस्था -70

धुंध और धूप के बीच - कल्पना मनोरमा -76

फूलों के झुरमुट वाली खिड़की - ममता सिंह -80

लम्बी कहानी

एक शिकायत विहीन प्रेम कथा : अनागत - कृष्ण बिहारी -86

कविताएँ –

वीरेंद्र आस्तिक, अनामिका सिंह

संस्मरण

एक थे ओझा जी - संतोष दीक्षित -98

आलेख –

कहानी में प्रेम : परम्परा और वर्तमान - डॉ. राकेश शुक्ल -102

प्रेमः एहसास से इमोजी तक - अचला भूपेन्द्र -104

संपादकीय

समय से बात - 43

यदि प्रेम अनुचित है तो फिर घृणा क्या है ...

अनुभव से बड़ा दर्शन नहीं है। चिंतन दर्शन को प्रवहमान बनाता है। एक खोज निरंतर जारी रहती है।

नए-नए आयाम जुड़ते जाते हैं जिनसे नए प्रतिमान गढ़े जाते हैं। मैं समझ नहीं पाया कि यदि प्रेम अनुचित है तो फिर नफरत क्या है। इस प्रश्न का उत्तर मेरी प्यास भी है और तलाश भी। अलभ्य और अप्राप्य ही जीवन का सबसे बड़ा अभाव है। इसके आगे जीवन की सभी उपलब्धियां कोई मायने नहीं रखतीं। जीवन इस अभाव की तलाश में बीत जाता है। इस तलाश को मैं क्षतिपूर्ति की वह प्रक्रिया कहता हूँ जो कला के सृजन का उत्स है। कला की सभी श्रेणियाँ प्रेम के अभाव में जन्मी हैं और निरंतर पल्लवित होती गई हैं।

शिव और शक्ति, प्रकृति और पुरुष के प्रेम को भारतीय जगत सुनता आ रहा है। संत और महंत कहते हैं, धर्म ग्रंथ कहते हैं, दुनिया की सभी किताबें कहती हैं प्रेम करो। जीव और जगत के बीच केवल एक रिश्ता है और वह प्रेम का अन्योन्याश्रित संबंध है। सबसे प्रेम करो। दुनिया प्रेम करती भी है। कोई किसी को प्रेम करने से नहीं रोकता। आप पेड़-पौधों से प्रेम करें, जीवों से प्रेम करें, कोलाहल पूर्ण समाज से प्रेम करें, जंगल से प्रेम करें, सब ठीक है। लेकिन जैसे ही आप किसी स्त्री/पुरुष से प्रेम करते हैं, समाज के सीने में कील गड़ जाती है। क्या यह पूरी दुनिया के यकायक एकदम उलट जाने की और उसके दोहरे चरित्र की सच्चाई नहीं है ? मुझे लगता है कि जो संबंध जीवन की रीढ़ है उसको तोड़ देने की हिमाकत क्रूरता की पराकाष्ठा है। यह धामिन साँप के उस चरित्र जैसा है जो पूंछ मारने के बाद पलट जाती है। सोने के फ्रेम में मढ़ा आईना भी झूठ नहीं बोलता। यह समाज आईने में अपना असली चेहरा देखने से डरता है। अपने ही बनाए सिद्धांतों से मुकरता रहा है। सीता के चरित्र को आदर्श मानने वाले यह क्यों नहीं समझते – राम के रूप को निरखति जानकी, कंगन के नग की परछाहीं ? प्रेम और आकर्षण का इससे उदात्त उदाहरण मुझे दूसरा नहीं दिखता। प्रेम एक निष्कलुष भावना है जो जन्म लेते ही मनुष्य को निर्मल और सहृदय बनाती है। अनुरागी और त्यागी बनाती है।

प्रेम की घृणा से अलंघ्य दूरी है। फिर, स्त्री-पुरुष के प्रेम को सामाजिक निंदा, ताने और व्यंग्य, उपेक्षा और दंड का भागी क्यों बनना पड़ता है। असहनीय यातनाओं के साथ-साथ वियोग को चिर संगिनी बनाकर जीना होता है। आप घृणा करें, निंदा करें, आलोचना करें, कोई कुछ नहीं कहता। लेकिन जैसे ही आप प्रेम करते हैं, अनगिनत प्रश्न खड़े हो जाते हैं। आपके अलावा सबकी प्रतिष्ठा दांव पर लग जाती है। जो कुछ नहीं करते, उनकी नाक कट जाती है। सब नकटे हो जाते हैं जबकि प्रेम एक सहज और जैविक स्पंदन है। क्या यह कम आश्चर्य की बात है कि दुनिया भर के अंतर्विरोधों के बावजूद प्रेम पर खूब लिखा गया है। दुनिया की अविस्मरणीय कहानियाँ, प्रेम कहानियाँ हैं !

एक स्पंदन अचानक होता है। धड़कन जिस्म में होती है मगर जब इसका पता चलता है तो विचित्र-सी बेचैनी बताती है कि धड़क तो यह जिस्म में रहा है मगर इसकी सांसें किसी दूसरे जिस्म में हैं। बस, यहीं से वह आकर्षण और खिंचाव सामीप्य के लिए छटपटाने लगता है। भावना इसे प्यार का नाम देती है। यह कब होगा, किससे होगा, क्यों होगा, कुछ पता नहीं होता। इसके लक्षण हो जाने के बाद तब पता चलते हैं जब गांठ परत दुर्जन हिये...। तब तक यह संक्रामक रूप ले लेता है। प्रेम कभी यह पूछकर नहीं होता, “क्या मैं आपसे प्रेम करूँ ?” एकतरफा हो या आग बराबर हो लगी हुई का कोई अर्थ नहीं होता। जाति-पाति, उम्र, धर्म और रंग-रूप सब बेमतलब। प्रेम किसी एक से होगा, एक बार होगा यह भी अनिश्चित है। यह जीवन में अनेक से और अनेक बार हो सकता है। इसकी अवधि का भी पता नहीं होता कि यह कितने समय तक होता रहेगा। किसी भी प्रेम की सांद्रता कम नहीं होती।

श्रवण में ध्वनि नहीं होती। रंग होता है, चटक। चढ़ता है तो फिर उतरता नहीं। दर्शन में प्यास होती है, तृप्ति नहीं। प्यास जग जाये तो बुझती नहीं। स्पर्श में अनुभव होता है, सुख नहीं। सुख एक मनः स्थिति है। अपने भीतर उपस्थित और जगत में अनुपस्थित। इन सबका एहसास तब होता है जब प्रेम करि काहू सुख न लहयौ की स्थिति अपरिहार्य हो जाती है। हमारी पीढ़ी से पहले और हमारी पीढ़ी तक प्रेम के स्वरूप में बहुत कम बदलाव हुए। तबके प्रेम में वियोग के क्षण अधिक और संयोग के पल दुर्लभ थे। बगावत निरुद्देश्य थी। उसमें सघन पीड़ा के दुर्दिन थे। उत्सर्ग था। कोई किसी पर तेजाब नहीं फेंकता था। किसी को ब्लैक मेल नहीं करता था। मन के एकांत और वियोग की असहनीय स्थिति को करवट-करवट सीने में उठते मीठे दर्द के साथ जी लिया जाता था। जब प्रेमिका की डोली उठती थी तो कहीं दूर से उसे जाते हुए मौन में ही अलविदा कह दिया जाता था। न जाने वह कैसे जाती थी मगर हम जानते हैं कि पानी के बिना तड़पती हुई मछली और ऑक्सीज़न के अभाव में सांस लेते हुए इंसान की क्या दशा होती थी। दिलों पर क्या बीतती थी। वे दिन हवा हुए। तब प्रेम प्रताड़ित नहीं करता था लेकिन देखते-देखते दुनिया बदल गई। वक़्त बदल गया। प्रेम का स्वरूप भी। आहों में भी प्रेम को भरपूर जीने और उसे जिंदा रखने में उम्र फिसलती गई।